हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

DTVF/19 (J-S)–M–**HL4**

Name: Sumit kumar Pandey **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): ~~Eng~~ Hindi **Reg. Number:** FP/July-19/822

Center & Date: 01-08-2019 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 0847994

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
							सकल योग (Grand Total)						

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द के कालजयी उपन्यास गबन से ली गई हैं। मालती वर्तमान समाज के दोहरे चरित्र को महत्ता के सामने उजागर करती है।

व्याख्या

वर्तमान समाज में धन की महत्ता सबसे ज्यादा है, उसके सामने बड़ी सभी चीजें हेय हैं। खुद का उदाहरण देते हुए वह कहती है कि मैं स्वयं धनी मरीजों पर गरीब मरीजों की तुलना में ज्यादा ध्यान देती हूँ।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) वर्तमान समाज की हकीकत बयाँ की गई है।
(2) ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी।
(3) सुक्त शैली
विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं।
(4) उपमा → मानो साक्षात् देवी है।
(5) वार्त्तालाप शैली

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास "मैला आँचल" से ली गई हैं। डॉ. प्रशान्त के पूर्णिया में हो रहे नवीन अनुभवों को साझा किया गया है।

व्याख्या

डॉ. प्रशान्त को पूर्णिया आए कुछ ही दिन हुए हैं। उसे सभी चीजें नई लगती हैं, अच्छी लगती हैं। गेहूँ के खेत, ताड़ के पेड़, बाग-बगीचे, कमला नदी के गड्ढे, किसानों के गीत सभी उसे मंत्रमुग्ध किए जाते हैं।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) उपमा
— किसान तथा कोयल

(2) आंचलिक भाषा
— पुरवैया

(3) लयात्मकता
— कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक

(4) किसी तीसरे व्यक्ति के रूप में (जो (डॉ. प्रशान्त) की कहानी सुना रहा है) कथाकार स्वयं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक "भारत-दुर्दशा" से ली गई हैं। भारत-दुर्दैव तथा अंधकार के बीच वार्त्तालाप का एक हिस्सा यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या

अंधकार अपना परिचय दे रहा है — उसका जन्म तमोगुण जी से हुआ है। चोर, लंपटों का वह जीवन है। वह कहता है कि अज्ञान और अंधेरा दोनों उसी के नाम हैं जो अलग - अलग लोगों पर अलग तरह से प्रभाव डालते हैं।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) अंधकार का मानवीकरण
(2) हिन्दी खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप
↓ चोर, उलूक और लंपटों
(3) ये पंक्तियाँ वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं।
(4) 'मेरा' की जगह 'हमारा' (बहुवचन) का प्रयोग।
(5) भाषा अत्यन्त ही सरस तथा ~~जिंदादील~~ जिंदादिल है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गई हैं। प्रियगुंमंजरी (मातृगुप्त की राजपत्नी) मल्लिका को राजनीति का महत्व समझा रही है।

व्याख्या

वह कहती है कि राजनीति और साहित्य में अन्तर है। राजनीति में हर एक क्षण महत्वपूर्ण होता है। एक छोटी सी चूक भी राजनीतिज्ञ के जीवन पर बड़ा प्रभाव डाल सकती है, इसलिए उसे हमेशा सतर्क रहना पड़ता है। ये सब बातें कालिदास को ध्यान में रखकर कही गई हैं।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) राजनीति का एकदम सटीक विवरण
(2) सूत्र शैली
— "राजनीति साहित्य नहीं है"
(3) उपदेशात्मक वाक्यों का प्रयोग
(4) संस्कृतनिष्ठ भाषा - अनिष्ट
(5) पंक्तियों का उद्देश्य छिपा हुआ है - प्रियगुंमंजरी चाहती है कि मल्लिका कालिदास को राजनीति में सक्रियता से भाग लेने के लिए प्रेरित करे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई हैं। मातृगुप्त और मुद्गल के बीच वार्तालाप हो रहा है।

व्याख्या

मातृगुप्त कविता का महत्व समझाते हुए कहता है कि ~~कवित्व~~ कविता शब्दों का एक चित्र है। जिसमें संगीत भी प्रस्फुटित होता है। अन्धकार - प्रकाश, असत्य - सत्य, जड़ चेतन, आत्मा - परमात्मा से मिलाने का काम कविता ही कराती है।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) सुत्र शैली

कवित्व वर्णमय चित्र है

(2) संस्कृतनिष्ठ भाषा

वर्णमय, आलोक, सत्, असत्

(3) "!" का सुन्दर प्रयोग

—— कौन कराती है? कविता ही न!

(4) आज के समय में गिरते मूल्यों को उपर उठाने में कविता सहायक सिद्ध हो सकती है। इस सन्दर्भ में ये पंक्तियाँ अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

'नई कहानी' पाश्चात्य जगत के "new story movement" पर आधारित एक आन्दोलन है, जो कहानियों के परम्परागत ढाँचे को सीरे से खारिज कर देता है।

नई कहानी की एक प्रतिनिधि रचना है 'ज़िन्दगी और जोंक" जो नई कहानी की सभी विशेषताओं को धारण करती है। ज़िन्दगी और जोंक कहानी मध्यवर्गीय जीवन के आसपास घुमती रहती है। यूँ तो कहानी का मुख्य पात्र रजुआ निम्न वर्ग का है, परन्तु उसके आस पास का पूरा वातावरण मध्यवर्गीय है।

ज़िन्दगी और ज़ोंक कहानी में कथा एक रेखीय दिशा में नहीं चलती, बल्कि टेढ़-मेढ़ रास्तों से होकर गुजरती है। हमें लगता है कि रजुआ मर गया, लेकिन फिर पता चलता है कि नहीं वह मरा नहीं है।

रजुआ का जीवन संघर्षों से भरा जीवन है। शहरी कृत्रिम जीवन के बीच फँसा हुआ एक किरदार,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके साथ सच्ची सहानुभूति रखने वाला कोई नहीं है। सभी उसका इस्तेमाल करना चाहता है। वह भी बस जी रहा है, क्यों जी रहा है नहीं पता।

मध्यवर्गीय चरित्रों की असंवेदनशीलता इस कहानी के माध्यम से उजागर होती है। रजुआ को झूठे चोरी के इल्ज़ाम में पीटने के बाद

"नीच और नींबू को निचोड़ने से ही रस निकलता है।"

कहना गिरते मानवीय मूल्यों का परिचायक है।

कहानी में दोहरे स्तर पर ही सही "मैं" और उसके पत्नी के बीच हल्की नोक-झोंक को भी दिखाया गया है, जो नई कहानी का एक प्रमुख हिस्सा है।

एक नये तरह का प्यार भी नई कहानी की प्रमुख विशेषता रही है जो रजुआ और एक भीखमंगीन के बीच पनपते प्यार के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से बखूबी प्रदर्शित किया गया है नयी कहानी में।

कहानी का कोई उद्देश्य नहीं होता, उनका मकसद उपदेश देना नहीं होता। ज़िन्दगी और जोंक भी उपदेश देने के मकसद से नहीं लिखी गई है। बस कुछ स्थितियों का चित्रण है, परन्तु ये चित्रण हमारे दिल में संवेदनशीलता का रक्त प्रवाहित करने के लिए पर्याप्त है।

कहानी का कोई अन्त नहीं है, रजुआ अभी भी जिन्दा है, ज़िन्दगी से लड़ता हुआ, और अधिक जीने की लालसा लिए हुए। नई कहानी की बाकी कहानियों की तरह कहानी एक ऐसे मोड़ पर खत्म होती है, जहाँ पाठक उम्मीद नहीं करता।

समग्रतः कहा जा सकता है कि ज़िन्दगी और जोंक नई कहानी की लगभग सभी विशेषताओं को धारण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

महाभोज मन्नू भण्डारी द्वारा रचित एक राजनीतिक उपन्यास है।

उपन्यास के महत्व के कारण

(1) राजनीतिक उपन्यास

हिन्दी साहित्य में बहुत ही कम उपन्यास राजनीति जैसे विषय को लेकर लिखे गए हैं। 'राग दरबारी' को छोड़ कोई अन्य उपन्यास जेहन में नहीं आता जिसने राजनीतिक विद्रूपताओं को इतनी बारीकी के साथ प्रदर्शित किया हो।

(2) समाहार शक्ति

अपने संक्षिप्त कलेवर में भी महाभोज बहुत सारी जन-समस्याओं को उजागर करने में सफल रहा है। भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, पत्रकारिता के गिरते मूल्य, पुलिस-राजनीति का गठजोड़ जैसी कई समस्याओं को इतने छोटे से उपन्यास में दर्शा देना वास्तव में प्रशंसा का पात्र है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) उपन्यास तथा नाटक

महाभोज उपन्यास तथा नाटक दोनों रूपों में प्रकाशित हुआ है। दरअसल उपन्यास की शैली मुख्यत: वार्तालाप शैली है, जो इसे नाटक के रूप में परिवर्तित करने में मदद करती है।

(4) महिला-लेखन

मन्नू भण्डारी के इस उपन्यास ने यह पूर्व-आग्रह को समाप्त करने में मदद पहुंचाई कि महिला-लेखक केवल ~~स्त्रियों~~ स्त्रियों की समस्याएँ ही चित्रित कर पाती हैं। "महाभोज" किसी भी बड़े/महान उपन्यास को चुनौती देने में हर स्तर पर सक्षम है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि महाभोज एक कालजयी उपन्यास है, जिसने हिन्दी-उपन्यास की दशा और दिशा तय करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आषाढ़ का एक दिन मोहन राकेश का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण नाटक है। नाटक की नायिका "मल्लिका" का चरित्र हिन्दी साहित्य जगत में सदैव चर्चा का विषय रहा है।

मल्लिका एक सामान्य नारी है, जो त्याग, दया, करुणा, प्रेम की प्रतिमूर्ति है। अपने प्रेम के लिए मल्लिका जैसा बलिदान शायद ही किसी अन्य चरित्र ने दिया हो। कालिदास को आगे बढ़ते देखने के लिए वह स्वयं का भविष्य न्यौछावर कर देती है। मल्लिका धैर्य की चरम सीमा है। वर्षों तक इस उम्मीद पर जिन्दा रहना कि मेरा प्रियतम किसी दिन मेरे पास जरूर आएगा, सचमुच एक असाधारण व्यक्तित्व का निर्माण करता है। अपने प्रेम के लिए उसे अपना शरीर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तक बचने के लिए मजबूर होना पड़ता है, इसे भी वह हँसकर सह जाती है। केवल एक प्रेमिका के रूप में नहीं बल्कि एक बेटी के रूप में भी वह अम्बिका के क्रोध का बड़े ही सहनशीलता से जवाब देती है। विलोम के साथ उसका पेश आना, उसके व्यक्तित्व के सख्त हिस्से को उजागर करता है। माल्लिका ~~अम्बिका~~ एक पशु प्रेमी भी है। हंस को घायल होते देख उसका हृदय द्रवित हो उठता है, उसके उपचार का वह हर संभव प्रयास करती है।

~~अम्बिका~~ माल्लिका का वृद्धों को सहायता पहुँचाने का प्रसंग उसके बड़ों के प्रति आदर के चरित्र को प्रदर्शित करता है।

समग्रतः माल्लिका के रूप में मोहन राकेश ने एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना की है। हालाँकि उसमें कुछ कमियाँ भी है। जैसे अम्बिका के कुछ आदेशों को न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानना, परन्तु ये प्रश्न उलटे उसके प्रेम के प्रति समर्पण को और दृढ़ बनाते है तथा चरित्र को और प्रभावशाली।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'प्रसाद की नाट्यभाषा उनके नाटकों की अभिनय-संभावनाओं को क्षरित करती है।' स्कंदगुप्त के आधार पर इस मत का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और..।

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द की कालजयी रचना 'गोदान' से ली गई है। होरी के मरने का दृश्य है। वह आखिरी साँस गिन रहा है।

व्याख्या

मरते समय होरी के सामने से बीते दिनों के सारे प्रसंग एक-एक कर गुजर रहे हैं। ये सारे प्रसंग खुशी के कुछ गिने-चुने पल हैं जो उसके संघर्षपूर्ण जीवन में कभी-कभी उपस्थित होते रहे हैं।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग

(2) गाय की लालसा उसके जीवन की सबसे बड़ी इच्छा है, जो मरते दम तक उसका साथ नहीं छोड़ रही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) उपमा - स्वपन चित्रों की भाँति बेमेल

(4) शब्दों के हेर-फेर से पद्यात्मकता आ गई है।

आगे का पीछे, पीछे का आगे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

~~प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के नाटक (स्कन्दगुप्त) से ली गई हैं।~~
प्रस्तुत पंक्तियाँ यशपाल के उपन्यास दिव्या से ली गई हैं।

व्याख्या

यशपाल दिव्या के माध्यम से भय के कारणों की पड़ताल कर रहे हैं। भय दो-तरफा रास्ता है। दो शक्तिशाली पुरुषों का एक दूसरे से भय करना जायज है।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) सूत्र शैली
"शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित"

(2) संस्कृतनिष्ठ भाषा
— सुषुप्त, अंकुरित इत्यादि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) शुक्ल जी के लेखन की वैज्ञानिकता परिलक्षित हो रही है।

(4) उपदेशात्मक शैली

(5) तुलना
— अनुकूल भूमि पाकर यह बीज (भाव) किसी भी समय अंकुरित हो सकता है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ एक दुनिया समानान्तर में संकलित धर्मवीर भारती की कहानी गुलकी बन्नो से ली गई है। गुलकी को वापस ले जाने आया उसका पति चेतावनी दे रहा है।

व्याख्या

वह धंधा कुआ से कहता है कि इस बार अगर गुलकी उसके कहे पर न चली तो वह गुलकी की हत्या ही कर डालेगा।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) पितृसत्तात्मक मानसिकता उजागर हो रही है।

(2) मुहावरों का प्रयोग
"न दूध की, न पूत की"

(3) गँवई भाषा
—— औरतिया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(4) प्रतीकात्मक शैली

हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

सन्दर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ ~~जयशंकर प्रसाद के नाटक (स्कन्दगुप्त' से ली गई हैं~~ यशपाल के उपन्यास 'दिव्या' से ली गई है। प्रेस्थ अपने पुत्र पृथुसेन को समझा रहा है।

व्याख्या

प्रेस्थ पृथुसेन से दिव्या को भूल जाने का आग्रह करता है। वह कहता है कि स्त्री केवल भोग्य है, एक स्त्री के लिए अपने महत्वाकांक्षाओं का त्याग कर देना अत्यन्त ही मुर्खता का काम है।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) पितृसतात्मक समाज का वर्णन
(2) "चाणक्य" का उद्धरण दिया गया है।
— "आतमनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि"
(3) सूत्र शैली
— स्त्री भोग्य है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(4) उपदेशात्मक शैली

(5) संस्कृतनिष्ठ भाषा

(6) आज का समाज भी ऐसी ही संकीर्ण मानसिकता से जुझ रहा है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't w
anything in thi

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई है। देवसेना स्कन्दगुप्त के विवाह-आग्रह का जवाब दे रही है।

व्याख्या

देवसेना कहती है कि किसी चीज की इच्छा दुख को जन्म देती है, इसलिए इच्छा करनी ही नही चाहिए। इच्छा से निवृत्ति में ही सुख है।

रचनात्मक सौन्दर्य

(1) सूत्र शैली
— "सुख और दुख अन्योन्याश्रय है।"

(2) प्रसाद के सानन्दमूलक विचारधारा का प्रक्षेपण है।

(3) बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखता है।

(4) भाषा उपदेशात्मक तथा संस्कृतनिष्ठ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान मुंशी प्रेमचन्द का एक कालजयी उपन्यास है। उपन्यास का नायक है- "होरी", जिसके इर्द- गिर्द कथा घुमती है।

होरी एक भारतीय किसान है और संघर्ष ही उसके जीवन का चरम यथार्थ है। महाजनों का ऋण, जमींदार का लगान, बिरादरी का डर, और इन सबके बीच एक गाय रखने की इच्छा को न पूरी कर पाने का दुख। यही कहानी का सार है।

होरी का जीवन फसल उगाने तथा उसे ऋण के रूप में वापस दे आने के बीच सिमट कर रह गया है। ऐसा नहीं है कि वह इन संघर्षों से उबरने की कोशिश नहीं करता। वह छल- कपट का प्रयोग कर भोला की गाय भी लाता है, परन्तु हाय रे भाग्य। उसका भाई ही उसका दुश्मन सिद्ध हो जाता है,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और गाय की हत्या कर दी जाती है। जब-जब वह संघर्षों से पार पाने की कोशिश करता है एक दूसरा संघर्ष आकर उसका गला दबा देता है। जमींदार, पटवारी और साहूकार की तिकड़ी उसे जीने नहीं देती और ऊपर से बिरादरी की नौटंकी अलग।

खेत में उपजे अनाज से मिले पैसे घर आने से पहले ही रफ्फू-चक्कर हो जाते हैं। दो लड़कियों की शादी करने की जिम्मेदारी अलग। दूसरी लड़की की शादी में तो नौबत यहाँ तक आ जाती है कि होरी अपना ईमान तक बेच डालता है। खेती के लिए पैसे लेने के एवज में शादी करना अपनी लड़की को बेच देने से कम थोड़े ही ना है। जिन्दगी उसे हर बार परास्त करती है और ऐसी परास्त करती है कि उसे फिर उठने की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिम्मत नहीं होती।
जिस मजबूरी से वह ज़िन्दगी पर नफ़रत करता आया था, वही काम वह करने को मजबूर होता है। संघर्षों का यही चक्र उसकी जान ले लेता है।

होरी आजीवन संघर्ष करता है कभी बिरादरी में अपनी शान बचाने के लिए, कभी खेती के लिए पैसे चुकाने के लिए, कभी अपनी बहू की रक्षा के लिए, कभी अपने भाई के लिए, कभी जमींदार से, कभी साहूकार से -- पर हर बार उसे मुँह की खानी पड़ती है। गाय पालने की इच्छा उसके मरते दम तक पूरा नहीं हो पाती।

संक्षेपतः कहा जा सकता है कि होरी का जीवन एक भारतीय किसान के आजीवन संघर्ष और अन्ततः उसके पराभव की करुण गाथा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल एक मार्क्सवादी लेखक हैं। जाहिर सी बात है कि जाने-अनजाने उनकी रचनाओं में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रक्षेपण होता ही होगा। इस सन्दर्भ में दिव्या भी कोई अपवाद नहीं है।

दिव्या और मार्क्सवादी विचारधारा

(1) पृथुसेन के साथ जाति के आधार पर भेदभाव वर्ग-संघर्ष की परिकल्पना का प्रदर्शित करता है।

(2) उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के रहन-सहन का वर्णन समाज में व्याप्त असमानता को दिखाता है।

(3) शहर के सड़कों पर बिनारे पड़े मजदूरों, सैनिकों की दयनीय स्थिति को दिखाया गया है।

(4) मार्क्स के माध्यम से मार्क्सवाद की कुछ सारी विचारधारायें प्रतिपादित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हुई है:—

जैसे - "मूर्ख तु और तेरे स्वामी ने स्वर्ग देखा है"

"स्त्री समाज के विधान से भोग्य है, प्रकृति के विधान से नहीं"।

हालांकि यशपाल ने कई जगहों पर मार्क्सवादी विचारधारा का अतिक्रमण भी ~~करते हैं~~ किया है।

(1) प्रद्युम्न सत्ता मिलने के बाद अभिजात्य वर्ग की भाँति वर्ताव करने लगता है, वासना में लिप्त हो जाता है।

(2) आचार्य धर्मरक्ष देव शर्मा एक निम्न वर्गीय स्त्री के मृत्यु पर दम तोड़ देते हैं।

समग्रतः दिव्या में मार्क्सवादी विचारधारा जरूर द्रष्टव्य है, परन्तु कुछ स्थानों पर इसका अतिक्रमण भी हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

धर्मवीर भारती की "गुलकी बन्नो" नई कहानी के आलोक में रची गई एक महत्वपूर्ण कहानी है।

गुलकी अपने पति के द्वारा अपमानित होने के बाद भी उसके पैरों पर पड़ती है तथा उसकी सेवा करने को तत्पर हो जाती है। नारी की ऐसी दयनीय स्थिति का ऐसा यथार्थपूर्ण चित्रण और कहीं देखने को नहीं मिलेगा।

गुलकी केवल अपने पति द्वारा ही अपमानित नहीं होती, गाँव के छोटे-छोटे बच्चे भी उसे हिकारत भरी नजरों से देखते हैं। घेघा बुआ (जिसने उसकी सम्पत्ति ले रखी है) उसे सब्जी का दुकान लगाने से मना कर देती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गाँव के सारे लोग किसी प्रकार उसकी जमीन-जायदाद हड़पना चाहते हैं, पर ऐसे कठिन समय में उसका साथ देने के लिए कोई नहीं आता। गुलकी अपने पति द्वारा शारीरिक तौर पर प्रताड़ित की जाती है, जिससे उसका कूबड़ निकल आता है, उसकी जान तक ली जाने की धमकी दी जाती है।

वास्तव में यह कहानी गुलकी की नहीं, गुलकी जैसे हजारों भारतीय नारी की है जो अपने परिवार, समाज से लाख प्रताड़ना झेलने के बावजूद एक नारकीय ज़िन्दगी जीने को विवश है। यह कहानी धर्मवीर भारती के मन की उपज नहीं, बल्कि तत्कालीन और वर्तमान भारतीय समाज की हकीकत है, जिसे जितनी जल्दी हो सके समाप्त करने की जरूरत है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य) के माध्यम से डॉ. रामविलास शर्मा ने दो तरह के मतों को खारिज करने का प्रयत्न किया है। पहले वे जो तुलसीदास को हिन्दू धर्म के उद्धारक के रूप में देखते हैं, दूसरे वे जो उन पर आरोप लगाते हैं कि वे उच्च वर्ण के वर्चस्वता का समर्थन करते थे।

रामविलास शर्मा कहते हैं कि यह सच है कि तुलसीदास ने ढ़ोल, गँवार, शुद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी जैसे दोहों का प्रयोग किया है। परन्तु ये दोहें सामन्त वर्ग द्वारा व्याप्त हुए लगते हैं, क्योंकि ये रामचरितमानस के बीच-बीच में अकास्मात ही उपस्थित हो जाते हैं। दूसरा तर्क यह है कि उसी रामचरितमानस में तुलसीदास ने सैकड़ों जगहों पर राम की कृपा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

निम्नवर्गीय चरित्रों के लिए सुरक्षित कर रखी है। तुलसीदास एक तरफ तो इन चरित्रों को प्रभु श्री राम का विशेष कृपापात्र बनाते हैं, वही दूसरी तरफ उन्हें "ताड़ना का अधिकारी" कहना तर्क संगत प्रतीत नहीं होता। यह बात भी इस तरफ इशारा करती है कि निम्न वर्गीय चरित्रों को नीच दिखाने वाले पद बाद में सामन्त वर्ग द्वारा अलग से जोड़े गये हैं, वरना कुंवर को भगवान राम अपने प्रिय भाई भरत के समकक्ष दर्जा न देते।

रामविलास शर्मा कहते हैं कि तुलसीदास स्वयं ही उच्च-वर्ग की प्रताड़ना का शिकार थे, अतः यह सवाल ही उत्पन नहीं होता कि वो निम्न वर्ग को नीचा दिखाने का प्रयत्न करेंगें।

तुलसीदास तो जाँति-पाँति तक में यकीन नहीं रखते।

"जाँति-पाँति न पूछौ
काहू की जाँति-पाँति"

कृपया इस
कुछ न लि
(Please do
anything i

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामविलास शर्मा एक और तर्क देते हुए लिखते हैं कि मुगलों के समय कोल-किरातों का आखेट किया जाता था, उन्हें तुलसीदास ने भगवान श्री राम के विशेष कृपा का पात्र बनाया है। अगर यह तथ्य तुलसीदास की प्रगतिशीलता सिद्ध नहीं करता तो क्या सिद्ध कर पाएगा यह समझ से बाहर है।

रामविलास शर्मा तो यहाँ तक कह देते हैं कि भगवान राम ने जैसे अपनी कृपा का पिटारा निम्न वर्ग के लिए ही रख छोड़ा था, वहाँ उच्च वर्ग के लिए कोई स्थान था ही नहीं।

समग्रतः, इस निबन्ध के माध्यम से रामविलास शर्मा ने वैज्ञानिक तरीके से तुलसीदास पर लगे आरोपों को खारिज किया है और उन्हें एक प्रगतिशील लेखक के रूप में स्थापित किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सद्गति दुखी चमार नामक एक व्यक्ति की कहानी है, जो एक पंडित जी के निम्न वर्ग के प्रति पूर्वाग्रह का शिकार है। पंडित जी बिना मजदूरी दिए उससे लकड़ी चीरने का काम कराते हैं, जो उसकी इच्छा के विरुद्ध है। बेगारी की समस्या का ऐसा यथार्थ चित्रण कहीं और देखने को नहीं मिलता।

आग जैसे सामान्य सी वस्तु की मांग किए जाने पर पंडिताइन आग का बड़ा टुकड़ा उसके शरीर पर फेंक देती हैं। एक निम्न वर्ग के प्रति इस तरीके का व्यवहार वर्तमान समाज की भी हकीकत है।

दुखी चमार के मरने के बाद जब उसके मोहल्ले से लाश ले जाने कोई नहीं आता, तो पंडित जी स्वयं रस्सी का फंदा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

डाल उसे कुएँ में फेंकते हैं। जीते जी जिस शरीर को पाँडेत जी ने छुआ तक नहीं, मरने के बाद भी उसके साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार— दलितों पर हो रही ज्यादती का यथार्थपूर्ण चित्रण है।

दुखी चमार के माध्यम से वर्षों से प्रताड़ित दलित समाज की समस्या को बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ प्रेमचन्द ने उठाया है। जिस समय यह कहानी लिखी गई थी, तब से लेकर आज तक कहानी उतनी ही प्रासंगिक है, और दलितों की समस्या उतनी ही भयावह। अपने आदर्शोन्मुख विचारधारा से अलग हटकर प्रेमचन्द ने दलित प्रश्न को पूरे यथार्थ के साथ उठाया है।

समस्या है- यह प्रेमचन्द को पता था, हमें पता है। जरूरत है एक सभ्य समाज की तरह इस प्रश्न का हल तलाशने की।

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

नाटक का नामकरण तीन तरह से किया जा सकता है।

1. स्थिति के आधार पर — आषाढ़ का एक दिन
2. प्रतीकात्मक - भारत-दुर्दशा
3. चरित्र के आधार पर

स्कन्दगुप्त में कोई भी स्थिति इतनी सशक्त नहीं है जिसके आधार पर नाटक का नामकरण कर दिया जाए। उदाहरण के लिए हूण-आक्रमण, षड्यंत्र (अनन्तदेवी) नाटक का केवल एक हिस्सा बनाते हैं, सम्पूर्ण नाटक नहीं।

अब प्रतीकात्मक नाम की बात करते हैं। अगर जयशंकर प्रसाद प्रतीकात्मक नाम रखते तो भी प्रतीक के केन्द्र में स्कन्दगुप्त ही आता जैसे कि "स्कन्दगुप्त की विजय" इत्यादि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चरित्र की दृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि देवसेना, विजया, बंधुवर्मा, भीमवर्मा, पर्णदत्त, कुमारगुप्त इत्यादि चरित्र इतने सशक्त नहीं हैं कि उनके आधार पर नायक का नामकरण कर दिया जाए। ये चरित्र जगह-जगह स्कन्दगुप्त के कार्यों में उसकी सहायता करने के काम में ही प्रवृत्त दिखते हैं।

इस दृष्टि से जयशंकर प्रसाद द्वारा रखा नाम उपयुक्त ही लगता है। कथानक के हर घटना के केन्द्र में स्कन्दगुप्त ही है — अनन्तदेवी का षड्यंत्र हो, विजया तथा देवसेना का प्रेम हो या फिर हूणों का आक्रमण सभी कुछ स्कन्दगुप्त से ही जुड़ा हुआ है, और चरित्रप्रधान नायक होने के कारण यह नाम सर्वसंगत प्रतीत होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation